घूमता आईना
Ghoonta Aina "Around the World"

हवा से चलने वाली बाइक बनाई स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के छात्रों ने एयर-ओ-बाइक नाम से

स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के छात्रों ने प्रोफेसर भरत राज सिंह, महानिदेशक (तकनीकी) के मार्गदर्शन और सचिव व सी.ई.ओ. की प्रेरणा से एयर-ओ-बाइक नाम से एक हवा से चलने वाली बाइक बनाई

Lucknow | 12 मार्च 2023

वाहन सार्वजनिक परिवहन का एक प्रमुख स्रोत हैं, इस तरह की तकनीक को उत्सर्जन में काफी हद तक कटौती करने के लिए नियोजित किया जा सकता है। भारत, चीन आदि जैसे विकासशील देशों में उत्सर्जन का प्रमुख स्रोत हल्के वाहन हैं और इसका योगदान लगभग 77.8 प्रतिशत है। इस तकनीक में शून्य प्रदूषणको देखते हुए वर्तमान उत्सर्जन का 50 से 60 प्रतिशत तक कम किया जा सकता है ।

एयर बाइक एक एयर टर्बाइन चलाकर शक्ति विकसित करती है, जो भंडारण सिलेंडर से संपीड़ित हवा का उपयोग तरल पदार्थ के रूप में करती है। यह वर्तमान मेंमोटरसाइकिलों पर लगे आंतरिक दहन इंजनों कोप्रतिस्थापित करता है। एक बार संपीड़ित हवा (20 बार के दबाव के साथ) से भर जाने के बाद प्रस्तावित एयर टर्बाइन और एयर टैंक मोटरसाइकिल को 40 मिनट तक चला सकते हैं। लंबे समय तकचलने के लिए पर्याप्त हवा को स्टोर करने के लिए उच्च क्षमता वाले एयरटैंकों को आकार देना और फिटिंग करना होगा।

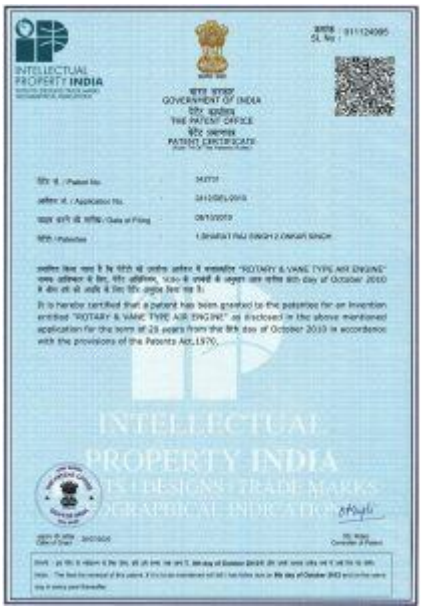

हालांकि, यह वर्तमान में एक बड़ी बाधा के रूप में है। अभी के लिए, इस तरह के वाहन का उपयोग करने वाले व्यक्ति को अपने टैंक को संपीड़ित हवा से भरने के लिए हर 30 किमी (19 मील) के आसपास रुकना होगा। संपीड़ित हवा भरने वाले स्टेशनों के वांछित बुनियादी ढांचे की आवश्यकता होगी और इस संपीड़ित वायु प्रौद्योगिकी के सफल कार्यान्वयन पर इसे बनाया जा सकता है। अंतिम लक्ष्य हवा को संपीड़ित करने और न केवल हल्के वाहनों बल्कि घरेलू उपकरणों को चलाने के लिए सौर और पवन ऊर्जा जैसे नवीकरणीय संसाधनों का उपयोग करना है।

उक्त अध्ययन से, यह निष्कर्ष निकाला गया है कि यदि इस तकनीक को विकासशील देशों में व्यापक रूप से लागू किया जाता है तो यह 50% से 60% कार्बन उत्सर्जन पर अंकुश लगा सकता है और अंततः ग्लोबल वार्मिंग के मुद्दे को काफी हद तक रोक सकता है।

---

https://ghoomtaaina.in/students-of-the-school-of-management-sciences-made-an-air-powered-bike-named-air-o-bike/